ISSN -PRINT-2231-3613ONLINE2455-8729
International Educational Journal
UGC APPROVAL NO. - 42652
CHETANA

**Received**on 9th Mar 2018, **Revised** on 18th Mar 2018; **Accepted** 28th Mar 2018

शोध पत्र

# माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण का शैक्षिक निष्पति पर प्रभाव का अध्ययन

* बलवान सिंह, शोधार्थी
हरिभाउ उपाध्याय महिला शिक्षक महाविद्यालय,सी.टी.ई.
हटूण्डी, अजमेर (राज.)

***मुख्य शब्द*** – *विद्यालय वातावरण, शैक्षिक निष्पत्ति आदि।*

## सारांश

*शिक्षा की महत्वपूर्ण सामग्री वातावरण है प्रत्येक बालक का पालन–पोषण एवम् विकास एक निश्चित वातावरण में होता हैं। इस वातावरण का उसके विकास में महत्वपूर्ण योगदान होता है। उपयुक्त वातावरण नहीं मिलने पर अनेक प्रतिभाएं अविकसित रह जाती है। अतः बालक को जैसा भौतिक वातावरण मिलता है वैसी ही जन्मजात शक्तियां विकसित होती है। जन्मजात शक्तियां यदि शिक्षा का आधार है तो वातावरण शिक्षा का माध्यम खाद एवम् जलवायु है और शिक्षा का फल है, बालक की अन्तनिर्हित शक्तियों का अधिकतम विकास। बालक की अंर्तिनिहित शक्तियों के विकास के आधार पर ही वह उपलब्धि प्राप्त करता है। प्रस्तुत शोध कार्य में सीकर जिले के माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों का चयन किया गया है। इन विद्यालयों से कुल 400 विद्यार्थियों का चयन किया गया। निष्कर्ष में माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण के मध्यमानों में सार्थक अन्तर पाया गया। माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति के मध्यमानों में सार्थक अन्तर पाया गया। माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण का शैक्षिक निष्पति पर सार्थक प्रभाव पडता है। लिंगभेद के आधार पर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण का उनकी शैक्षिक निष्पति पर सार्थक प्रभाव नहीं पडता है। माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण एवं शैक्षिक निष्पति के मध्य सार्थक संबंध पाया गया।*

## प्रस्तावना

शिक्षा मानव जीवन की आधारशिला है। शिक्षा के पथ पर चलकर ही व्यक्ति सत्य की मंजिल पर पहुँचता है। अर्थात् शिक्षा वह माध्यम है, जो व्यक्ति का सर्वांगीण विकास कर उसे एक योग्य एवं संस्कारित नागरिक बनाती है। ज्ञान का उजाला ही मनुष्य के जीवन में फैले अज्ञान के अंधकार को मिटाता है। शिक्षा का अमृत ही मानव को इस नश्वर संसार में अमरत्व प्रदान करता है। इसलिए संसार का प्रत्येक विवेकशील प्राणी ईश्वर से यही प्रार्थना करता है –

**असतो मा सद्गमय**

**तमसो मा ज्योतिर्गमय**

**मृत्योर्मा अमृतंगमय**

शिक्षा अंग्रेजी शब्द 'एजूकेशन' का हिन्दी रूपान्तर है। 'एजूकेशन' शब्द की उत्पति लैटिन भाषा के शब्द 'एड्केयर' से हुई है जिसका अर्थ है 'अन्दर से बाहर निकालना' संकुचित अर्थ में शिक्षा का अभिप्राय है बालक की अन्तर्निहित क्षमताओं का विकास करके उसे मजबूत मनुष्य बनाना जिससे वह जीवन की चुनौतियों का सामना कर सके। व्यापक अर्थ में शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो आजीवन चलती रहती है। और जीवन के प्रत्येक अनुभव से उसके भण्डार में वृद्धि होती है। शिक्षा ही उचित–अनुचित में अन्तर करने की दृष्टि प्रदान करके व्यक्ति को राम के मार्ग का अनुगामी होने और रावण के मार्ग पर न चलने की सीख देती है, क्योंकी शिक्षा का एक अर्थ मानव को अतीत जीवन की सफलता एवं विफलता से परिचित कराकर भविष्य का मार्ग प्रशस्त करती है। शिक्षा के मेघ ही जीवन में यश, कीर्ति, सम्मान व सफलता की हरियाली लाते है।

हितोपदेश में भी शिक्षा के महत्व के बारे में कहा गया है कि वह माता शत्रु है और पिता बैरी है जो अपने बच्चे को शिक्षा से वंचित रखता है क्योंकी वह बालक विद्वानों की सभा में उसी तरह सोभा नहीं पाता, जिस प्रकार हंसों के बीच में बगुला शोभा प्राप्त नहीं करता, जन्म के समय बच्चा बगुले के समान ही होता, लेकिन माता–पिता और शिक्षक मिलकर उसे शिक्षा के द्वारा हंस बनाते है जिससे बालक नीर–क्षीर विवेकी बन सके।

वर्तमान समय में कई प्रकार के विद्यालय समाज में संचालित हो रहे हैं। इनमें अंग्रेजी माध्यम, हिन्दी माध्यम, आवासीय विद्यालय, निजी विद्यालय एवं राजकीय विद्यालय आदि प्रमुख हैं। इन विद्यालयों में शिक्षकों की योग्यता, विद्यालय परिवेश में सुविधाओं का समावेश, शिक्षकों का चरित्र, विद्यार्थियों का पारिवारिक वातावरण, विद्यालय की प्रतिस्पर्धात्मक प्रवत्ति, विद्यार्थियों के अभिभावकों का शैक्षिक एवं सामाजिक स्तर आदि के द्वारा वातावरण निर्मित होता है। प्रत्येक माता–पिता एक विद्यालय से यह अपेक्षा करता है कि उसका शैक्षिक, सामाजिक वातावरण उच्च कोटि का हो ताकि उसमें अध्ययनरत उनके बालकों पर उत्तम प्रभाव पड़े। वे उच्च शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त कर सकें एवं भविष्य में परिवार, समाज एवं कार्यस्थल में सुसमायोजित हो सकें। विद्यालय वातावरण का एक विद्यार्थी की भावी उन्नति में अहम् प्रभाव पड़ता है।

गीता में कहा गया हैं कि निष्काम कार्य करते हुए ब्रह्म ज्ञान और आत्म ज्ञान का बोध कराने वाली प्रक्रिया ही शिक्षा है। शिक्षा के इस अप्रतिम महत्व को ध्यान में रखकर ही प्रत्येक माता–पिता अपने बच्चों को शिक्षा ग्रहण करने हेतु विद्यालय भेजना अपना धर्म समझते है। वास्तविक शिक्षा का मूल्य रत्नों से भी अधिक है, क्योंकी रत्न बाहरी चमक दमक दिखाते हैं जबकि वास्तविक शिक्षा अन्तः करण को उज्ज्वल व निर्मल बनाती है। **स्वामी विवेकानन्द के अनुसार** – ''शिक्षा मनुष्य के अन्दर सन्निहित पूर्णता का प्रदर्शन है।'' शिक्षा के आदान–प्रदान की प्रक्रिया अतीत काल से चली आ रही है। मानव कुछ पाश्विक प्रवृतियां लेकर असहाय रूप में इस विश्व में प्रवेश करता है शिक्षा के द्वारा उसकी जन्मजात पाश्विक प्रवत्तियों का शोधन तथा मार्गान्तीकरण होता है, जिसके परिणामस्वरूप वह सामाजिक प्राणी बनता है। वास्तव में शिक्षा के अभाव में मानव की प्रगति निश्चेष्ट हो जाती है और उसमें तथा अन्य प्राणियों में बहुत अन्तर रह जाता है।

**महाराजा भर्तृहरि के अनुसार**– ''विद्याविहीन नर पशु समानः।'' अर्थात् विद्या के अभाव में मनुष्य पशु के समान है। मानव के बौद्धिक विकास द्वारा समाज और सामाजिकता का विकास हुआ है। इस कारण ही शिक्षा को मानव के लिए आवश्यक ही नहीं वरन् उसके जीवन की आधारशिला माना गया है।

प्राचीन युग में शिक्षा को न तो पुस्तकीय ज्ञान का पर्यायवाची माना गया है और न जीविकोपार्जन का साधन। इसके विपरित शिक्षा को वह प्रकाश माना गया, जो व्यक्ति को अपना बहुअंगी विकास करने, उत्तम जीवन व्यतीत करने और मोक्ष प्राप्त करने में सहायता कर सके। दूसरे शब्दों. में. शिक्षा को जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में. व्यक्ति को पथ प्रदर्शित करने वाला प्रकाश माना गया था। शिक्षा पर विद्यालय वातावरण का निश्चित प्रभाव पड़ता है। इस विद्यालय वातावरण के

प्रभाव से ही एक विद्यार्थी भावी जीवन में प्रगतिशील हो सकता है। इसलिए विद्यालय वातावरण को विद्यार्थी के शैक्षिक एवं सामाजिक जीवन की नींव कहा जा सकता है।

विद्यालय वह पवित्र हवन शाला हैं जिसमें शिक्षकों के मस्तिष्क में उपस्थित ज्ञान एवम् अनुभव का हवन होता हैं और उसकी ज्वालाओं से सुनागरिकों का निर्माण होता हैं हवन शाला की सुगन्ध से समाज मदमस्त होता है अपने पूरे सेवाकाल में अध्यापक ज्ञान की आहूति देता रहता हैं। विद्यालय, विद्यार्थियों. को जीवन का वास्तविक अनुभव प्रदान करने तथा विद्यार्थियों को राष्ट्रीय एकता और नागरिकता का पाठ पढाकर, उनका नैतिक जीवन ऊंचा उठाने में मदद करता है। यह विद्यार्थियों में. सामाजिक भावना का विकास, ज्ञान का उचित उपयोग, विद्यार्थियों में. निहित योग्यताओं व क्षमताओं का विकास, शैक्षिक ज्ञान की अभिवृद्धि, स्वतंत्र विचारधाराओं का विकास करने के साथ–साथ शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त करने के लिए अभिप्रेरित करता है। तथा साथ ही उनमें समायोजन क्षमता का भी विकास करता है। बालक का व्यक्तित्व बाल्यावस्था से किशोरावस्था तक विकसित होता है तथा उसका अधिकांश समय विद्यालय में ही व्यतीत होता है।

शिक्षा की महत्वपूर्ण सामग्री वातावरण है प्रत्येक बालक का पालन–पोषण एवम् विकास एक निश्चित वातावरण में होता हैं। इस वातावरण का उसके विकास में महत्वपूर्ण योगदान होता है। उपयुक्त वातावरण नहीं मिलने पर अनेक प्रतिभाएं अविकसित रह जाती है। अतः बालक को जैसा भौतिक वातावरण मिलता है वैसी ही जन्मजात शक्तियां विकसित होती है। जन्मजात शक्तियां यदि शिक्षा का आधार है तो वातावरण शिक्षा का माध्यम खाद एवम् जलवायु है और शिक्षा का फल है, बालक की अन्तनिर्हित शक्तियों का अधिकतम विकास। बालक की अंर्तिनिहित शक्तियों के विकास के आधार पर ही वह उपलब्धि प्राप्त करता है। यह प्रभाव जानने के लिये ही शोधकर्ता के द्वारा इस संबंध में अनुसंधान करने की जिज्ञासा उत्पन्न हुई।

**शोध समस्या का अभिकथन**

अभिकथन स्पष्ट एवं प्रभावी होना चाहिए। प्रस्तुत शोध का अभिकथन इस प्रकार है –

**''माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण का शैक्षिक निष्पति पर प्रभाव अध्ययन''।**

**अध्ययन की आवश्यकता और महत्त्व**

विद्यार्थियों का मन बहुत ग्रहणशील होता है, इसलिये वे जिस प्रकार के वातावरण में रहते हैं, उसकी गहरी छाप उनके मन–मस्तिष्क पर पड़ना अवश्यंभावी है। बालको की उपलब्धियों को स्थापित करने की क्षमता के विकास में उनके शारीरिक एवं मानसिक पक्ष के साथ–साथ विद्यालय वातावरण का योगदान भी महत्त्वपूर्ण होता है। विद्यालय वातावरण के अन्तर्गत विद्यालय का परिवेश, शिक्षक उपकरण, कक्षा–कक्ष, फर्नीचर, स्वच्छता, सौन्दर्यकरण आदि बातों का समावेश होता है, जिसका प्रभाव निश्चित रूप से विद्यार्थियों के मन–मस्तिष्क पर पड़ता है, परिणामस्वरूप उनकी उपलब्धियाँ प्रभावित होती हैं।

**क्रो एवं क्रो** ने माना है कि बालकों के विकसित होने वाले व्यक्तित्व पर विद्यालय के अनुभवों का प्रभाव अधिक पड़ता है। जिस विद्यालय का वातावरण विद्यार्थियों के अनुकूल होता है, वे जीवन में आगे की ओर बढ़ते हो। विद्यार्थियों की माध्यमिक स्तर की शिक्षा के उपरान्त घर एवं विद्यालय प्रांगण से बाहर निकलता है तो उसके सामने अपनी उपलब्धियों को व्यक्त करने की जिम्मेदारी होती है जिसे कुछ बच्चे बखूबी निभाते हैऔर कुछ बच्चे पिछड़ जाते हैं जिसका मूल कारण विद्यालयी वातावरण होता है।

बालक का मन कोरे कागज के समान होता है, अतः अध्यापक उसे जैसा स्वरूप देना चाहे, वह वैसा ही बन जाता है। अतः बालको को उचित दिशा प्रदान करने के लिये अध्यापक एवं विद्यालय परिवेश का महत्वपूर्ण योगदान रहता है।

बालको. में सृजनशीलता की भावना पाई जाती है लेकिन उचित परामर्श, वातावरण तथा आवश्यक सामग्री के बिना उनमें सृजनशीलता की भावना पनप नही पाती है जिससे विद्यार्थी अपने को असहाय एवं अधूरा समझता है। विद्यार्थी अपनी उपलब्धियों के माध्यम से जीवन में आने वाले अवसरों का लाभ उठा सकता है लेकिन इसके लिये उसे तैयार करने में विद्यालय परिवेश का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है।

बालक बड़ा होकर समाज में रहता है, जहां पर उसके जीवन में अनेक समस्याएँ एवं कठिनाईयाँ आती हैं, लेकिन जिन विद्यार्थियों. में समायोजन क्षमता तथा उपलब्धि स्तर निम्न होता है, वे इन समस्याओं से हमेशा जूझते हैं,इसमें कहीं न कहीं विद्यालय वातावरण के प्रभाव का भी योगदान रहता है। जिस विद्यालय का वातावरण अच्छा नहीं होता है वहां के विद्यार्थी शैक्षिक स्तर से पिछड़ जाते हो और उनकी उपलब्धियों को पूर्णता प्राप्त नहीं हो पाती इस वजह से वे कर्मशील, संस्कारी एवं आशावादी नहीं बन जाते हैं तथा अपनी पूर्ण क्षमताओं का उपयोग नहीं कर पाते और उनका परिश्रम, समय तथा धन बेकार चला जाता है।

शैक्षिक विकास के बिना विद्यार्थियों. में उपलब्धिया नहीं पायी जाती हैं जिसकी वजह से वे मानसिक एवं शारीरिक दृष्टि से अस्वस्थ होते एवं समस्याग्रस्त बन जाते हैं। विद्यार्थी महत्त्वाकांक्षी होते है तथा अनेक प्रकार से अपनी आर्थिक, सामाजिक एवं मानसिक पुष्टि के लिये प्रयत्नशील रहते है। विद्यार्थियों के मस्तिष्क में समय–समय पर अनेक प्रश्न एवं जिज्ञासायें उठती है, जिनका समाधान एक अच्छे विद्यालय वातावरण में हो सकता है और जिसका सीधा संबंध विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि से जुड़ा होता है, क्योंकि विद्यार्थियों की शंकाओं का समाधान नही होने पर उनका शैक्षिक विकास अवरूद्ध हो जाता है और अपने भावी जीवन में. वे अन्य लोगों से पिछड़ जाते है तथा उनकी प्रतिभाएँ दबकर समाप्त हो जाती हो।

उपर्युक्त कारणों को दृष्टिगत रखते हुए शोधकर्त्ता ने इस क्षेत्र में अनुसंधान करने का मानस बनाया है।

**सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण**

किसी भी समस्या पर शोध करने से पूर्व यह देखना आवश्यक है कि विभिन्न दृष्टिकोण से समस्या का हल कितना उपयोगी है, हम जानते है कि बालक समाज व राष्ट्र के भावी नागरिक है। देश का भविष्य ऐसे बालकों के हाथ में है जो शिक्षा प्राप्त करने के बाद भावी उत्तरदायित्व को सम्भालने वाले है। परिवार, समाज व देश को बालकों से बड़ी–बड़ी आशायें है। प्रस्तुत शोध में विद्यालय वातावरण तथा शैक्षिक निष्पति से सम्बन्धित अध्ययन इस प्रकार है – विल्सन एफ. एच. (1976) ने जूनियर हाईस्कूल विद्यार्थियों की उपलब्धि तथा हाईस्कूल स्तर पर सक्सेना वंदना (1988) ने समायोजन, उत्तेजना तथा शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक सम्बन्धों पर अध्ययन किया। यादव, शर्मिला, सिंह, जे.डी. (2013) ने राजकीय एवं गैर राजकीय महाविद्यालयों में शैक्षिक वातावरण तथा शिक्षक मनोबल का अध्ययन किया। अग्रवाल, श्वेता (2015) ने उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के बालक–बालिकाओं के संगठनात्मक वातावरण का अध्ययन किया। उपरोक्त शोध कार्य में अधिकतर शोध कार्य विद्यार्थियों की अध्ययन आदतें, बालकों पर पारिवारिक एवं संगठनात्मक वातावरण का प्रभाव, उपलब्धि अभिप्रेरणा तथा माता–पिता की विद्यार्थियों की शैक्षिक क्रियाओं में सहभागिता से सम्बन्धित समस्याओं पर हुए है। अर्थात् अब तक हुए शोध कार्य में विद्यालय वातावरण तथा शैक्षिक निष्पति के सम्बन्ध में प्रत्येक चर का अलग–अलग रूप में अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत शोध समस्या माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण का शैक्षिक निष्पति एवं समायोजन पर प्रभाव का अध्ययन से सम्बन्धित कोई भी शोध कार्य नहीं हुआ है। इसी कारण शोधकर्ता द्वारा प्रस्तुत शोध की आवश्यकता प्रतिपादित हुई है।

**शोध में प्रयुक्त शब्दावली**

**विद्यालय** –विद्यालय वह पवित्र हवन शाला हैं जिसमें शिक्षकों के मस्तिष्क में उपस्थित ज्ञान एवं अनुभव का हवन होता हैं और उसकी ज्वालाओं से सुनागरिकों का निर्माण होता है। हवन शाला की सुगन्ध से समाज मदमस्त होता है। अपने पूरे सेवाकाल में अध्यापन ज्ञान की आहूति देता रहता है। विद्यालय का शाब्दिक अर्थ है विद्या+आलय, अर्थात विद्या का घर। ऐसे स्थान जहां नियोजित शिक्षा की प्रक्रिया चलती है और बच्चों में वांछित ज्ञान का विकास किया जाता है, विद्यालय कहे जाते है। **जॉन ड्यूबी के अनुसार** –''विद्यालय का एक ऐसा विशिष्ट वातावरण है, जहाँ जीवन के कुछ गुणों और कुछ विशेष प्रकार की क्रियाओं तथा व्यवसायों की शिक्षा इस उद्देश्य से दी जाती हैं कि बालक का विकास वांछित दिशा में हो।

**माध्यमिक विद्यालय**– राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली के ढ़ाँचे 10+2+3 के अनुसार प्रथम 10 वर्ष की शिक्षा माध्यमिक स्तर की शिक्षा कहलाती है। माध्यमिक स्तर की शिक्षा छात्रों को विज्ञान, मानविकी और समाज विज्ञानों की विशिष्ट भूमिकाओं से अवगत कराना आरम्भ करती है। यह एक उपयुक्त अवस्था होती है। जब बच्चों को इतिहास बोध एवं राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य से परिचित कराया जाता है और उन्हें एक नागरिक के रूप में अपने संवैधानिक कर्तव्य और अधिकार समझने का अवसर प्रदान किये जाते है।

**विद्यालय वातावरण**– विद्यालयी वातावरण को अभी तक विभिन्न प्रकार से परिभाषित किया जा चुका है। विद्यालयी वातावरण से तात्पर्य अधिगमकर्त्ता के वातावरण में उन शक्तियों से है जो अधिगमकर्त्ता के शैक्षिक विकास में योगदान देने की क्षमता रखती है। ये शक्तियाँ स्कूली या कॉलेज वातावरण, गृह वातावरण, अन्य विभिन्न सामाजिक संगठनों के वातावरण का एक भाग हो सकती हो।

**शैक्षिक निष्पति**– व्यक्ति अपने जीवन में विभिन्न क्रियाओं के द्वारा अनेक प्रकार का ज्ञान एवं कौशल प्राप्त करता है। वह ज्ञान एवं कौशल ही उसकी उपलब्धि या निष्पत्ति कहलाती हैं। निष्पत्ति के क्षेत्र भिन्न–भिन्न होते हैं जैसे एक व्यक्ति विज्ञान के क्षेत्र में एक खेल के क्षेत्र में और एक सामाजिक क्षेत्र में अपना कौशल स्थापित करता है। यह कौशल स्थापना, उच्च, मध्यम एवं निम्न स्तर की होती है। इसी प्रकार शिक्षा के क्षेत्र मे स्थापित ज्ञान एवं कौशल शैक्षिक निष्पत्ति कहलाता है।

**फ्रीमैन** के अनुसार – ''शैक्षिक निष्पति का तात्पर्य, पाठ्यक्रम के विभिन्न विषयों में व्यक्ति के ज्ञान, समझ एवं कौशल से है।''

**सुपर डी. ई.** का शैक्षिक निष्पत्ति के विषय में कथन है कि – ''**शैक्षिक निष्पत्ति का तात्पर्य व्यक्ति ने क्या और कितना सीखा है तथा उपलब्धि क्या है, से है।**

**हबेल, आर. के.** के अनुसार – ''शैक्षिक निष्पति छात्रों द्वारा ग्रहण किया गया ज्ञान एवं क्षमता है। निष्पत्ति उपलब्ध परीक्षण वह अभिव्यक्त है जो एक विशेष पाठ्यक्रम के विभिन्न विषयों में व्यक्ति के ज्ञान, समझ एवं कुशलता का मापन करता है। इसका निर्माण विशेष शैक्षिक उपलब्धि के प्रभाव को जानने में किया जाता है। विषय या विभिन्न विषयों का परीक्षण किया जाता है क्योंकी किसी भी निष्पत्ति परीक्षण का उद्देश्य होता है कि अमुक विषय में व्यक्ति को कितना और क्या–क्या सीखा है।

**अध्ययन के उद्देश्य**

प्रस्तुत शोधकार्य निम्नलिखित उद्देश्यों पर आधारित है –

1. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण का अध्ययन करना।

2. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पति का अध्ययन करना।

3. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण का शैक्षिक निष्पति पर प्रभाव का अध्ययन करना।

4. लिंगभेद के आधार पर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण का उनकी शैक्षिक निष्पति पर प्रभाव का अध्ययन करना।

5. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण एवं शैक्षिक निष्पति के मध्य संबंध का अध्ययन करना।

**अध्ययन की परिकल्पनाएँ**

प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्ता द्वारा संबंधित उद्देश्यों को ध्यान में रखकर निम्नलिखित सम्भावित परिकल्पनाओं पर कार्य किया–

1. माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है।
2. माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है।
3. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण का शैक्षिक निष्पति पर सार्थक प्रभाव नहीं पडता है।
4. लिंगभेद के आधार पर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण का उनकी शैक्षिक निष्पति पर सार्थक प्रभाव नहीं पडता है।
5. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण एवं शैक्षिक निष्पति के मध्य सार्थक संबंध नहीं है।

**अनुसंधान की विधि**

शोधकर्त्ता द्वारा अपने शोध कार्य के लिये सर्वेक्षण विधि को आधार बनाया जायेगा।

**शोध अध्ययन हेतु उपकरण**

प्रस्तुत शोध कार्य के लिए सम्बन्धित तथ्यों के संकलन हेतु निम्नलिखित प्रमापीकृत उपकरणों का प्रयोग किया गयाः–

1. **विद्यालय परिवेश (वातावरण) परिसूची** – डॉ. करूणा शंकर मिश्र द्वारा निर्मित।
2. **शैक्षिक निष्पत्तिके मापन हेतु** विद्यालय अभिलेखों के आधार पर स्वनिर्मित मापनी का प्रयोग किया गया।

**अध्ययन हेतु न्यादर्श** – प्रस्तुत शोध कार्य में सीकर जिले के माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों का चयन किया गया है। इन विद्यालयों से कुल 400 विद्यार्थियों का चयन किया गया, जिनमें 200 विद्यार्थी सरकारी विद्यालय (100 छात्र + 100 छात्राएँ) एवं 200 विद्यार्थी गैर सरकारी विद्यालय (100 छात्र + 100 छात्राएँ) के लिए गये।

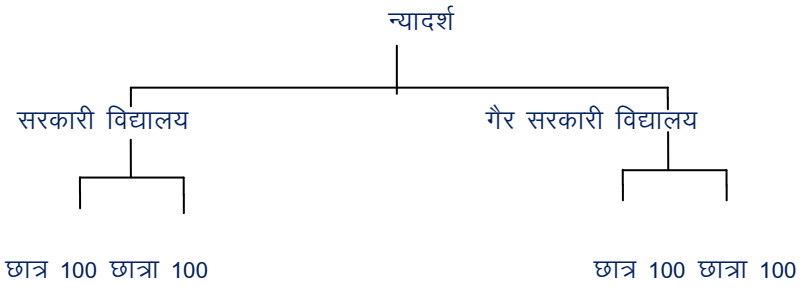

**अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी**

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रयुक्त की गई सांख्यिकी इस प्रकार है–

(अ) मध्यमान (ड)

(ब) मानक विचलन (ैण्क्ण्)

(स) टी परीक्षण (ज जमेज)

(द) सहसम्बन्ध (त)

**शोध अध्ययन के चर –**

शोध अध्ययन में प्रयुक्त चर निम्नलिखित है –

चर

स्वतंत्र चर

1. विद्यालय वातावरण

आश्रित चर

1.शैक्षिक निष्पति

**अध्ययन की परिसीमाएँ**

1. वर्तमान अध्ययन केवल सीकर जिले तक सीमित रहेगा।
2. अध्ययन हेतु माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों को चुना जायेगा।
3. न्यादर्श के रूप में माध्यमिक स्तर के 400 विद्यार्थियों का चयन किया जाएगा, जिनमें से 200 विद्यार्थी सरकारी विद्यालय से एवं 200 विद्यार्थी गैर सरकारी विद्यालय से लिए जाने सम्भावित हैं।
4. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण का उनकी शैक्षिक निष्पत्ति पर ही प्रभाव का अध्ययन किया जाएगा।
5. अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जायेगा।
6. उपकरण के रूप में शैक्षिक निष्पत्ति के लिए विद्यालय अभिलेखों के द्वारा स्वनिर्मित मापनी का प्रयोग किया जाना प्रस्तावित है।
7. सम्भावित परिकल्पनाओं के आधार पर सांख्यिकी के रूप में "मध्यमान", "प्रमाप विचलन", "टी परीक्षण" एवं "सहसम्बन्ध" का प्रयोग किया जाना प्रस्तावित है।

**निष्कर्ष**

1. माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण के मध्यमानों में सार्थक अन्तर पाया गया।
2. माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति के मध्यमानों में सार्थक अन्तर पाया गया।
3. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण का शैक्षिक निष्पति पर सार्थक प्रभाव पडता है।
4. लिंगभेद के आधार पर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण का उनकी शैक्षिक निष्पति पर सार्थक प्रभाव नहीं पडता है।
5. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण एवं शैक्षिक निष्पति के मध्य सार्थक संबंध पाया गया।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची**


अग्रवाल, श्वेता (2015) ''उच्च माध्यमिक बालक एवं बालिका विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन'', जर्नल ऑफ एज्यूकेशन साइकोलॉजी, वॉल्यूम ग्ग्प्प्ए जुलाई 2015

बेस्ट, जॉन डब्ल्यु (2011) "रिसर्च इन एजुकेशन", प्रिटिंग हाल प्रा. लि. नई दिल्ली

चावला, अनिता (2012) ''द रिलेशनशिप बिटवीन फैमेली एनवारमेंट एण्ड एकेडमिक एचीवमेंट'', इंडियन स्ट्रीम रिसर्च जर्नल , 1 (12), 1–4

गहलावत, मंजू (2011) ''ए स्टीड ऑफ ऐडजस्टमेंट अमंग हाई स्कूल स्टूडेंट्स इन रिलेशन टू देयर जेण्डर'', इंटरनेशनल रेफर्ड रिसर्च जर्नल, आईएसएसएन–2009/29954, वॉल्यूम प्प्

माथुर,एस.एस. (2012) शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

राय, पारसनाथ (2013) अनुसंधान परिचय, अग्रवाल पब्लिशर्स, आगरा

शर्मा, भावना (2012) ''आवासीय विद्यालय के छात्राओं की सामाजिक परिपक्वता विद्यालय समायोजन एवं शैक्षणिक उपलब्धि का अध्ययन'', इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एज्यूकेशन एण्ड साइकोलॉजी रिसर्च, वॉल्यूम 4, पेज नं 165, मार्च 2015

यादव, शर्मिला, सिंह, जे.डी. (2013) ''राजस्थान के अनुदानित एवं गैर–अनुदानित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में शैक्षिक वातावरण तथा शिक्षक मनोबल का अध्ययन'', जर्नल ऑफ इंडियन एज्यूकेशन, 28 (4), पेज नं. 37–46, 2016



**** Corresponding Author:***

**बलवान सिंह**, शोधार्थी

हरिभाउ उपाध्याय महिला शिक्षक महाविद्यालय,सी.टी.ई.

हटूण्डी, अजमेर (राज.)